4/2/22 डा. गिरजा उराँव
एसोसिएट प्रोफेसर
विषय- मनोविज्ञान (2)

~~स्नातक भाग I~~

3. नैतिक दृष्टिकोण (Ethical viewpoint) — इस दृष्टिकोण के अनुसार जिस व्यक्ति का व्यवहार धर्म सांस्कृतिक एवं नैतिक नियमों (Ethical Laws) के अनुरूप होता है, उसे सामान्य कहते है, और जिस व्यक्ति का व्यवहार इनके अनुरूप नहीं होता है, उसे असामान्य कहते हैं। अतः इस दृष्टिकोण के अनुसार अनैतिक (Immoral) व्यवहार ही असामान्य व्यवहार है।

अन्त में यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज के नैतिक नियम (moral Laws) भी अलग-अलग होते हैं। एक ही क्रिया को एक समाज में नैतिक और दूसरे समाज में अनैतिक समझा जाता है। चचेरे भाई-बहन में विवाह होना एक समाज में नैतिक और दूसरे समाज में बिल्कुल अनैतिक समझा जाता है। इसी प्रकार जीव को मारना एक समाज में पाप का कार्य है और दूसरे समाज में बड़े पुण्य का कार्य समझा जाता है, क्योंकि जीव चढ़ाने से देवता खुश होते हैं। अतः असामान्यता की व्याख्या में नैतिक दृष्टिकोण का कुछ महत्व नहीं है।

4. सांख्यिकी दृष्टिकोण (Statestical viewpoint) — सांख्यिकी दृष्टिकोण के समर्थकों का कहना है कि जिस व्यक्ति का व्यवहार औसत व्यक्तियों के व्यवहार से भिन्न है, उसे असामान्य कहते हैं। इसके समर्थकों का मानना है कि सामान्य और असामान्य में मात्रा का अन्तर होता है प्रकार का नहीं। जैसे व्यक्ति में किसी गुण की मात्रा औसत से अधिक या कम होगी तो उसे असामान्य समझा

जाएगा। इसके माध्यम से असामान्य को समझाने में असमर्थ होती है। इस दृष्टिकोण में यह साफ किया गया है कि सामान्य और असामान्य में गुणों का अन्तर नहीं होता है बल्कि सिर्फ मात्रा का अन्तर होता है।

इस दृष्टिकोण में गुणों के आधार पर असामान्यता की व्याख्या की गयी है परन्तु यह सही नहीं है। जैसे कोई विद्यार्थी अंग्रेजी में मंद बुद्धि का है तो हिन्दी में सामान्य या प्रतिभाशाली भी हो सकता है यहाँ उसे असामान्य नहीं माना जा सकता है दूसरी बात यह है कि सामान्य से कितना कम या कितना अधिक होने पर उसे असामान्य माना जाए। यह निर्णय करना कठिन है। ऐसा भी देखा जाता है कि कभी-कभी कम बुद्धि वाले व्यक्ति भी वातावरण में अभियोजित हो जाते हैं।